March 24, 2025

Team 1 - Bhanu, Kusum, Mayuri

Location: IGNCA, New Delhi

भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अध्ययन - IGNCA यात्रा वृत्तांत

स्थान: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA), दिल्ली

तारीख: 24 मार्च, 2025

यह यात्रा संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले IGNCA में हमारी समझ को गहरा करने का अवसर था। दिन भर में विभिन्न विभागों, विशेषज्ञों और शास्त्रीय धरोहरों की प्रस्तुति हुई।

प्रारंभिक सत्र

Prof. रमेश गौड़ और श्री वीरेन्द्र बांगड़ू ने हमें कला निधि पुस्तकालय और कलाकोष परियोजनाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे संस्कृति की विरासत को डिजिटली संरक्षित किया जा रहा है।

संस्कृति की परिभाषा और श्रेणियाँ

एक सरल चार्ट के माध्यम से बताया गया:

सांस्कृतिक विरासत

/ | \ \

दस्तावेजी | अमूर्त | मूर्त | प्राकृतिक

इन श्रेणियों का सतत विकास, मानवता और SDG (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स) से गहरा संबंध बताया गया।

कला निधि (Kalanidhi) और डिजिटलीकरण मिशन

- पांच मिलियन पांडुलिपियों का संरक्षण
- बहुभाषी धरोहर – बाली, ब्राह्मी, त्रिपुरी, नांदी
- OCR तकनीक संभव नहीं, मैन्युअल ट्रांसलेशन जरूरी
- Gyan Mahasagar योजना के अंतर्गत 50,000 पांडुलिपियाँ 5 वर्षों में डिजिटाइज़ की जाएंगी।

महत्वपूर्ण डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म

- भारत संस्कृति पोर्टल – डाउनलोड के लिए खुला
- Vedic Heritage पोर्टल – vedicheritage.gov.in
- Sangam ऐप – 400+ सांस्कृतिक कड़ियाँ

Reprography Unit और Visual Archives

- रेप्रोग्राफी के अंतर्गत माइक्रोफिल्मिंग
- फोटो संग्रह – राजा दीनेदयाल
- स्लाइड यूनिट – दृश्य अभिलेखागार

Sudhir Lal का सत्र – भारतीय कलाकोष और गीतशास्त्र

श्री सुधीर लाल ने बताया कि भारत की बौद्धिक परंपरा में कला और साहित्य का गहरा संबंध है।

- 'गणत' परंपरा – मौखिक एवं रचनात्मक धरोहर
- विष्णु दशावतार – लोक रचनात्मकता की जीवंत मिसाल
- कला और प्रतीक – प्रतीकों से भाव की व्याख्या होती है
- गीत शास्त्र – गान, वादन, नर्तन और साहित्य का संगम

महत्वपूर्ण संकल्पनाएँ

- कला तत्व कोश, कलामूलिका, कलावलोकन – तीन मुख्य ग्रंथ
- ग्लोसरी परियोजना – 15 खंडों में अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर
- लिंग विमर्श – स्त्री और पुरुष की सांस्कृतिक अवधारणाएँ
- अधिष्ठान और प्रतीक – जैसे: 'ध्रुवतारा', 'कुण्डली' आदि

रामायण की क्रिटिकल एडिशन

- नेपाल, नेवारी स्क्रिप्ट का उपयोग
- 36 अध्यायों में 108 प्रमुख पांडुलिपियाँ

- समभाव से पारंपरिक और आधुनिक व्याख्या

नारी संवाद परियोजना

- 'शक्ति – तपस्विनी' की अवधारणा
- 12 महिलाओं की सांस्कृतिक योगदान की कहानियाँ

मुख्य बिंदु:

- कलानिधि – एक विस्तृत पुस्तकालय जिसमें दुर्लभ पांडुलिपियाँ संरक्षित हैं
- डिजिटलीकरण मिशन – संस्कृति को संरक्षित करने की राष्ट्रीय योजना
- Gyan Mahasagar – ज्ञान के भंडार को आम लोगों तक पहुँचाना
- ABCD प्रोजेक्ट – विलुप्त हो रही कलाओं के कलाकारों के साथ सहयोग कर नए डिज़ाइन तैयार करना
- भारत की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर (Intangible Heritage) को भी संरक्षित किया जा रहा है – जैसे लोकनाट्य, संगीत, नाट्य कला आदि
- छात्रों के प्रशिक्षण की ज़रूरत और संस्कृति की सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा मुद्दा है

भारतीय कलाकोश – डॉ. सुधीर लाल का व्याख्यान

मुख्य विषय: भारतीय परंपरागत बौद्धिक धरोहर और कला का समावेश

प्रमुख बातें:

- 'ज्ञान का गणराज्य' – जिसमें विविध कलाओं का समावेश होता है
- विष्णु दशावतार के माध्यम से कल्पनाशीलता को जीवित रखना
- कथा-नाट्य के माध्यम से संस्कृति की पुनर्रचना
- देवता रूप निर्वचन – देवताओं के विविध रूपों की आराधना और उनकी कलात्मक प्रस्तुति
- चित्रकला, नृत्य, वाद्य संगीत, गीत शास्त्र – इन सभी कलाओं की पारंपरिक व्याख्या
- कला-तत्त्वकोश, कलामूलोचना, कलावलोकन – प्रमुख कार्य जो भारतीय कला और विचारधारा को गहराई से समझाते हैं

- 15 वॉल्यूम्स में कलाकोश, जिनमें से 7 पूर्ण हो चुके हैं, शेष निर्माणाधीन हैं

संवेदनशील विषयों पर विश्लेषण:

- लैंगिक विमर्श – पुरुषत्व, स्त्रीत्व और तृतीय लिंग जैसे विषयों पर शास्त्रीय अवधारणाएँ
- व्याप्ति, आधिष्ठान, प्रतीक, व्यालंकार जैसे सांस्कृतिक तत्वों की बहुस्तरीय व्याख्या

महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों पर कार्य

- रामायण की क्रिटिकल एडिशन – लगभग 400 वर्षों की परंपरा, वडोदरा के गायकवाड़ परिवार द्वारा संरक्षित
- नाट्यशास्त्र, मनुस्मृति, संगीत नाट्य अकादमी के संरक्षण प्रयास
- नेवारि लिपि, शारदा, मोडी, नंदिनागरी – प्रमुख लिपियाँ जिनमें ग्रंथ संरक्षित हैं
- वैदिक अध्ययन – दस मंडलों का गहन अध्ययन
- अष्टविक्रुति, जटा पाटह, प्रति शाक, तथा अन्य पद्धतियाँ
- कथाशास्त्र और प्रयोग – शास्त्र और जनपदीय परंपराओं का मेल

डॉ. पावेल महाजन का व्याख्यान: "वैदिक GPS और संस्कृति"

- शंकरदेव की कथा – मिथक और यथार्थ की सीमाओं को पुनर्परिभाषित करना
- वैदिक ज्योतिष और होरोस्कोप की वैचारिक गहराई
- "Let noble thoughts come to us from all directions" – सभी दिशाओं से अच्छे विचार ग्रहण करने की परंपरा
- आडियो-विजुअल डॉक्युमेंटेशन के ज़रिए ओरल ट्रडिशन को संरक्षित करने की योजना
- अष्टविक्रुति, प्रश्नोत्तर शैली, फेस-टू-फेस गुरुकुल विधि – वैदिक शिक्षा पद्धतियों का आधुनिक संदर्भ में प्रयोग

उल्लेखनीय पहल:

- 2023 में 60 लाख लोगों ने वैदिक रीसाइटेशन सुना
- नचिकेता ग्राफिक स्टोरीज – बच्चों के लिए सांस्कृतिक सामग्री

- संगम ऐप, वेदिक हेरिटेज पोर्टल – सांस्कृतिक सामग्री को तीन भाषाओं (हिंदी, अंग्रेज़ी, बांग्ला) में उपलब्ध करना

संस्कृति पर विचार:

"– यह भावना पूरे सत्र में अनुभव की गई जहाँ सभी प्रतिभागियों ने भारत की संस्कृति, परंपरा और आधुनिक तकनीक के मेल को निकट से देखा!

आख़िरी सत डॉ. सच्चिदानंद जोशी द्वारा हुआ। जोशी जी एक वरिष्ठ लेखक है तथा कविता व नाटक में भी विशिष्ट रुचि है ।

उनकी कुछ प्रभावित करने वाले कार्यों में-

1. जीवन और विराम का रूपक:

- "थोड़ा अल्पविराम जरूरी है…" – ज़िन्दगी को समझने के लिए विराम आवश्यक है।
- बनारस के घाट, शुद्धता, शांति और निरंतरता के प्रतीक हैं।

प्रमुख है!

2. संस्कृति का संगीत:

•शब्द, नाटक, कविता और संगीत – सभी कलाएं मिलकर भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा को प्रकट करती हैं।

•"यूं ही साथ-साथ चलते रहना" – संस्कृति सतत प्रवाह है।

---

3. सांस्कृतिक धरोहर और नाट्यशास्त्र:

भारत मुनि का 'नाट्यशास्त्र'

शास्त्रीय रंगमंच की नींव।

कालिदास, भवभूति, भास, शूद्रक – महान नाटककार जिन्होंने परंपरा को आगे बढ़ाया।

मध्यकालीन काल (10वीं-18वीं सदी):

लोक और धर्म की सम्मिलित ऊर्जा – धर्म और लोक साहित्य का समावेश।

---

4. सांस्कृतिक पहचान और सॉफ्ट पावर:

भारतीय संस्कृति

|

| | | |

लोक कलाएं नाट्यशास्त्र रीति-रिवाज़ कविता-संगीत

| | | |

लोक-धर्म शास्त्र-परंपरा त्यौहार भाव-संप्रेषण

भारतीय संस्कृति अंतःसंवाद (Intercultural Identity) को जन्म देती है।

•1990 के बाद भारत की Soft Power (सांस्कृतिक प्रभाव) दुनिया भर में फैलने लगी।

---

5. संस्कृति क्या है?

•Documentation का मतलब है – किसी भी संस्कृति को आत्मसात करना और उसे दिव्यता से जोड़ना।

•अल्पना – घर में स्त्री द्वारा बनाया गया सांस्कृतिक चित्र जो मिटाया जाता है और नए रूप में रचा जाता है।

---

6. सांस्कृतिक मूल्यों की अवधारणा (Ethos):

"भारत = संस्कृति का मूल"

•परिवार की अवधारणा – "यह मेरा नहीं, यह हमारा है"।

•संस्कार – यह केवल रिवाज़ नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है।

---

7. भारत: एक सांस्कृतिक इकाई

चित्र: भारत की सांस्कृतिक रेखाचित्रात्मक रूपरेखा

भारत

_____|_____

| | |

योग वस्त्र फिल्म

| | |

संगीत लोककला साहित्य

•भौगोलिक विविधता सांस्कृतिक एकता को विभाजित नहीं करती, बल्कि और समृद्ध करती है।

भारत की संस्कृति साँस की तरह है, जो हर दिन हमारे जीवन में बहती है।

संस्कृति केवल अध्ययन की वस्तु नहीं, यह जीवित परंपरा है।

अस्थाई नहीं, सतत संवाद की प्रक्रिया है – एक यात्रा जो वेदों से वैश्विक संवाद तक जाती है।

यह एक अत्यंत समृद्ध और ज्ञानवर्धक अनुभव रहा, जिसमें भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं, कलाओं, पांडुलिपियों, ग्रंथों, और उनके संरक्षण के तरीकों को गहराई से समझने का अवसर मिला। IGNCA का यह प्रयास भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण कदम है!

क़ुतुब मीनार यात्रा – मेरी यात्रा वृतांत

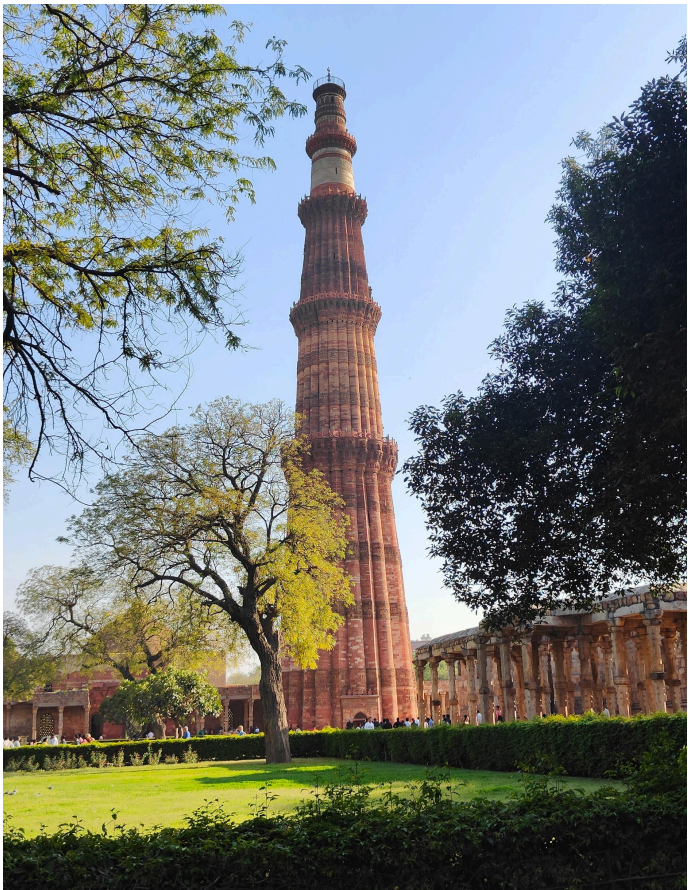

स्थान: दिल्ली, भारत

आज मैं दिल्ली की ऐतिहासिक धरोहर क़ुतुब मीनार के सामने खड़ी हूँ। इसकी ऊँचाई, नक्काशीदार शिलालेख, और लाल बलुआ पत्थर की भव्यता मुझे अतीत की यात्रा पर ले जाती है। यह सिर्फ़ एक इमारत नहीं, बल्कि भारत के इतिहास का एक अमूल्य दस्तावेज़ है। जब मैं इस विशाल मीनार की ओर देखती हूँ, तो सोचती हूँ कि कितने कारीगरों ने अपने हाथों से इसे तराशा होगा, और कितनी सदियों तक इसने दिल्ली के बदलते दौर देखे होंगे.

इतिहास की झलक

क़ुतुब मीनार दुनिया की सबसे ऊँची ईंटों से बनी मीनार है, जिसकी ऊँचाई 72.5 मीटर है। इसका निर्माण 1193 ईस्वी में दिल्ली सल्तनत के पहले शासक कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू करवाया था। लेकिन ऐबक ने केवल इसकी आधारशिला रखी थी, और इसके बाद इल्तुतमिश और फिरोज़ शाह तुगलक जैसे शासकों ने इसे पूरा किया।

ऐसा कहा जाता है कि इस मीनार का निर्माण लाल कोट (जो तोमर राजाओं का किला था) के अवशेषों पर किया गया था। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि इसका डिज़ाइन अफगानिस्तान के जाम की मीनार से प्रेरित था। यह विचार करना रोमांचक है कि जब यह मीनार बनाई जा रही थी, तब दिल्ली का परिदृश्य कैसा रहा होगा!

क़ुतुब मीनार क्यों बनाई गई थी?

इसकी बनावट के पीछे कई मत हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह विजय स्तंभ के रूप में बनाई गई थी, जो भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना का प्रतीक थी। कुछ इसे मस्जिद की मीनार मानते हैं, जहाँ से अज़ान दी जाती थी। जबकि कुछ लोग इसे निगरानी टावर भी मानते हैं, जिससे आसपास के क्षेत्रों पर नज़र रखी जाती थी।

मेरा अनुभव

जब मैं क़ुतुब परिसर में घूमती हूँ, तो इतिहास जीवंत होता प्रतीत होता है। पास ही खड़ा लौह स्तंभ, जो सदियों से ज़ंग रहित बना हुआ है, भारत की उन्नत धातु विज्ञान तकनीक का प्रमाण है। वहीं, अलाई मीनार, जिसे अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाना शुरू किया था, लेकिन अधूरी रह गई, उसकी अधूरी महत्वाकांक्षाओं की कहानी कहती है।

जब मैं अपनी उंगलियों से लाल बलुआ पत्थर पर खुदी हुई आयतों को महसूस करती हूँ, तो लगता है जैसे मैं इतिहास को छू रही हूँ। क्या कभी किसी कारीगर ने सोचा होगा कि सैकड़ों साल बाद कोई इस मीनार को इसी श्रद्धा से निहारेगा?

सूरज ढल रहा है, और मैं धीरे-धीरे परिसर से बाहर निकलती हूँ। एक आखिरी बार मुड़कर क़ुतुब मीनार को देखती हूँ—एक अडिग गवाह, जिसने शताब्दियों तक दिल्ली के उत्थान और पतन को देखा है। मेरे लिए यह सिर्फ़ एक ऐतिहासिक इमारत नहीं, बल्कि समय और सभ्यता का पुल है, जो हमें हमारे गौरवशाली अतीत से जोड़ता है।

अंतिम विचार

क़ुतुब मीनार की इस यात्रा ने मुझे इतिहास के और करीब ला दिया है। हर पत्थर, हर शिलालेख के पीछे एक कहानी छिपी है, और आज मैं उन कहानियों का हिस्सा बनकर लौट रही हूँ।

कला यस्मिन् प्रतिष्ठिता : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS जनपथ, नई दिल्ली 110001 JANPATH, NEW DELHI-110001	**Tuesday, March 25, 2025** **@Indira Gandhi National Center for the Arts, New Delhi** **Team 2** **(Maino, Anoobhuti, and Nilakshi)**

Presentation: Shri. Verender Bangroo on Visual Archives
Dr. Shilpi Roy on Cultural Archives and Shri. Pranab Chakraborty on Conservation
Screening of Documentary Film on "Leela in Kheriya"
Prof. Richa Kamboj, HOD, Kaladarshana Divison
Afternoon Sessions:
Prof. P. Jha, Director of Cultural Informatics (CIL)
Prof. Ramesh C Gaur, Director & Head Kalanidhi Division
Dr. Ajit Kumar, Director of Mausam Project
Dr. Ajay Mishra, Associate Professor
Screening of Documentary Film on Jharkhand - AsurBirjia

Lord Shri Jagannatha Temple

Started his presentation with a prayer to Lord Shri Jagannatha, and the wordings are as below:

I bow down my head to Lord Jagannata The Lord of the Universe, The PURNA BRAHMA, or the Absolute	मैं अपने सिर को भगवान जगन्नाथ के सामने झुका देता हूँ, सारी सृष्टि के भगवान, पूर्ण ब्रह्मा, या निराकार परमात्मा,

The “Supreme Deity” of Sanatan Dharma Sachidananda of the Upanishads, Suryanarayan of the Sauryas, Dakhinakalika of the Saktas, Mahaganapati of the Ganapatyas, Darubrahma of the Brahmins Nirakara Sunya Purusa of Vaishnavas, Jaganta of Indigenous Community Purusottama of the Vedas	सनातन धर्म के "सर्वोच्च देवता", उपनिषदों के सत्यचिदानंद, सौर्य के सूर्यनारायण, शक्तों के दक्षिणकालिका, गणपतियों के महागणपति, ब्राह्मणों के दारूब्रह्म, वैष्णवों के निराकार शून्य पुरुष, आदिवासी समुदाय के जगंता, वेदों के पुरुषोत्तम।

**He is Purushottama - the supreme. Many centuries may have come and gone, but He remains surrounded in mystery. In Puri, when you ask people, sevakas, devotees about Lord Jagannatha, they always quote an ancient Sanskrit verse which says:

Sarvam Rahasyam Purusottamasya Devonajanati Kuto Manusyah.
"सर्वं रहस्यं पुरुषोत्तमस्य देवो न जानति कुतो मनुष्यः।"

"पुरुषोत्तम भगवान का सम्पूर्ण रहस्य देवता भी नहीं जानते, तो फिर मनुष्य क्या जान सकते हैं।"

**This verse emphasizes the idea that the divine mysteries of the Supreme Being, Lord Purusottama (a form of Lord Jagannath), are beyond even the gods’ understanding, highlighting the transcendental and incomprehensible nature of the Divine. सर्वोच्च भगवान, पुरुषोत्तम (जो भगवान जगन्नाथ का रूप हैं), के दिव्य रहस्य देवताओं की भी समझ से परे हैं, जो दिव्य के पारलौकिक और अव्याख्येय स्वभाव को उजागर करता है।

Procession at the great temple of Jagannatha 1818 AD, Painting, British Library, London

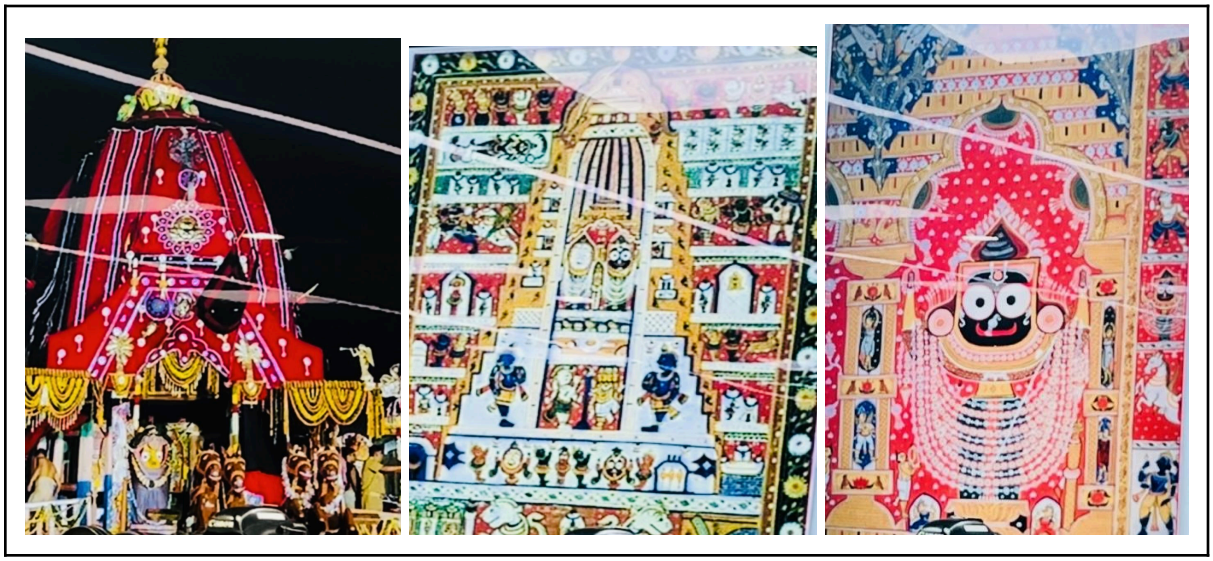

Rath Yatra of Lord Jagannatha

The Rath Yatra: रथ यात्रा भगवान जगन्नाथ की प्रसिद्ध वार्षिक यात्रा है, जो पुरी, ओडिशा में आयोजित होती है। यह यात्रा आषाढ़ शुक्ल एकादशी से द्वादशी तक, यानी जून-जुलाई के महीने में होती है। रथ यात्रा में भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलराम और बहन सुभद्रा के रथों पर सवार होकर, पुरी के श्री जगन्नाथ मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक जाते हैं। इस दौरान, विशाल रथों पर भगवान के विग्रह सजे होते हैं, और लाखों भक्तों की भीड़ उनके रथों को खींचने के लिए उमड़ती है। रथ यात्रा एक अत्यंत धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, जो भगवान के भक्तों के लिए एक आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। यह यात्रा विश्वभर में प्रसिद्ध है और इसमें भाग लेने के लिए भक्त दूर-दूर से आते हैं। रथ यात्रा का आयोजन भगवान जगन्नाथ की विश्वभर में भक्ति का प्रचार करने और भक्तों के साथ उनके दिव्य दर्शन का एक अवसर प्रदान करने के लिए किया जाता है।

Concept of Rath (Chariot)

"रथ" एक इंडो-ईरानी शब्द है जिसका उपयोग पहियों वाले रथ या गाड़ी के लिए किया जाता है। रथ की यह अवधारणा ऋग्वेद में पाई जाती है, जो दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में भारत में पाए जाने वाले लकड़ी से बने होते थे। वेदों में, सूर्य देवता एक रथ में चलते हैं। वैदिक आर्य मानते हैं कि सूर्य भगवान विष्णु हैं, जो वामन (बौने देवता) रूप में तीन कदमों में स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल — ब्रह्मांड के तीनों स्तरों — को नाप लेते हैं। सुमेरियन और बेबीलोनियाई परंपराओं में, ऋषभ (सूर्य देवता) रथ में चलते हैं। मिस्रवासियों का मानना है कि सूर्य सुबह से शाम तक पश्चिम से पूर्व की ओर एक नाव में चलता है।

रथ का वर्णन रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन परंपराओं में मिलता है। रामायण और महाभारत में यह बताया गया है कि हिंदू देवता रथों पर सवार होते थे। रामायण में रावण ने सीता का हरण पुष्पक विमान नामक रथ में किया था।

महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बने थे और युद्धभूमि में रथ चलाया था। बौद्ध परंपरा में, प्राचीन भारत में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर पाटलिपुत्र में रथ यात्रा का आयोजन होता था, जिसका वर्णन चीनी यात्री फा-ह्यान ने चौथी शताब्दी ईस्वी में किया है। जैन धर्म में, महावीर जयंती को भव्य रथ यात्रा के रूप में मनाया जाता है।

“Rath” is an Indo-Iranian term used for a spoke-wheeled chariot or cart. The concept of the chariot is found in Rigveda, which is made up of wood found in India in the 2nd millennium BCE. In Veda, the Sun God moves in a chariot. Vedic Aryans say the Sun is Lord Vishnu, the Bamana (Dwarf God) who won three levels of the universe, Heaven, Hell, and Earth, with his three strides. Among Sumerians and Babylonians, Rshab (Sun God) moves in a chariot. Egyptians say the sun moves in a boat from west to east from morning to evening.

Rath was found in the Ramayana, Mahabharata, Buddhist, and Jain traditions. Ramayana and Mahabharata narrate that Hindu deities were riding chariots. In Ramayana, Ravana had stolen Sita in a chariot called Pushpaka Vimana. In Mahabharata, Lord Krishna was the Sarathi or Charioteer of Arujun on the battlefield. Buddhists organized the Rtha Yatra in Pataliputra in ancient India during the Buddha Purnima as described by Fa-Hien (Chinese Traveller) in the 4th century, A.D. Jains celebrate Mahavir Jayanti as “Rath Yatra” in a grand procession.

रथ यात्रा का धार्मिक महत्व

हिंदू धर्म: जगन्नाथ पुरी की रथ यात्रा भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा के भक्तों के लिए अत्यंत पवित्र पर्व है। इसे भगवान कृष्ण की गुंडिचा यात्रा भी माना जाता है, जब वे अपनी मौसी के घर जाते हैं। वैदिक परंपरा: रथ का उल्लेख वेदों में मिलता है, जहाँ सूर्य देवता रथ पर सवार होते हैं। भगवान विष्णु को सूर्य का प्रतीक माना जाता है। महाभारत: भगवान कृष्ण अर्जुन के सारथी थे, जिससे रथ धर्म और जीवन की राह का प्रतीक बनता है। रामायण: रावण ने पुष्पक विमान (रथ) में सीता का हरण किया, जो इस यात्रा के महत्व को दर्शाता है। बौद्ध धर्म: प्राचीन भारत में बुद्ध पूर्णिमा पर पाटलिपुत्र में रथ यात्रा का आयोजन होता था। जैन धर्म: जैन धर्म में महावीर जयंती को रथ यात्रा के रूप में मनाया जाता है, जिसमें भगवान महावीर की भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है।

भक्ति आंदोलन में – जगन्नाथ-पुरी के मठ में संत और विद्वान

भगवान जगन्नाथ, जो संपूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हैं, उन्होंने अपने भक्तों पर जाति, वर्ग, संप्रदाय या रंग का कोई भेदभाव किए बिना अपनी दिव्य कृपा बरसाई है — जो भी भक्त उन्हें प्रेम और भक्ति से पुकारता है, भगवान उनकी पुकार अवश्य सुनते हैं। भारत के अनेक महान संतों और विद्वानों जैसे आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्क, गुरु नानक, जयदेव, श्री चैतन्य और मीरा बाई आदि ने पुरी आकर भगवान जगन्नाथ को ईश्वर के सर्वोच्च रूप के रूप में अनुभव किया और महसूस किया। इन संतों ने अपने अनुयायियों को धर्मोपदेश देने के लिए मठों की स्थापना की, जो आज भी पुरी मंदिर के आसपास स्थित हैं। ये मठ समय-समय पर भगवान जगन्नाथ की सेवा और विभिन्न अनुष्ठानों में भाग लेते हैं।

श्री चैतन्य महाप्रभु: श्री चैतन्य महाप्रभु भगवान जगन्नाथ के परम भक्त थे उन्होंने पुरी में कई वर्षों तक निवास किया और वहीं उन्होंने अपने जीवन की अंतिम साँस ली। एक बार 'अनवसर' (Anasara) अनुष्ठान के दौरान, जब वे श्री जगन्नाथ के दर्शन नहीं कर पाए, तो वे विरह में व्याकुल होकर उन्मत्त हो गए। उनके लिए भगवान जगन्नाथ ही गोविंद थे। उन्होंने कहा था:
"शून्य शून्य महा शून्य, गोविंद विरहे मम" अर्थात् — "जब मैं गोविंद को नहीं देख पाता, तो सब कुछ मुझे निरर्थक और रिक्त प्रतीत होता है।" भगवान के प्रति उनकी गहन भक्ति और प्रेममय विरह का गहरा भाव छिपा है।उन्होंने वैष्णव धर्म को पूरे भारतवर्ष में प्रचारित किया।बाद में उनके अनुयायी भक्ति वेदांत प्रभुपाद ने इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस्कॉन (ISKCON) आंदोलन की शुरुआत की, जिसे उन्होंने संपूर्ण विश्व में फैलाया।आज रथ यात्रा पश्चिमी दुनिया के कई शहरों में भी भव्य रूप से मनाई जाती है, और यह सबसे व्यापक रूप से मनाए जाने वाले उत्सवों में से एक बन चुकी है।

श्री जयदेव: श्री जयदेव भगवान जगन्नाथ के एक महान भक्त थे, जो अपने अद्भुत संस्कृत काव्य 'गीत गोविंद' के लिए प्रसिद्ध हैं। एक बार, जब वे गीत गोविंद लिख रहे थे, तो एक पद लिखने में संकोच कर रहे थे — "देहि पदपल्लवमुदारम्" — यह भगवान श्रीकृष्ण का राधा से विनम्र अनुरोध था कि वह अपने पावन चरण उनके मस्तक पर रखे।जयदेव को यह पंक्ति लिखना उचित नहीं लगा, क्योंकि यह उन्हें श्रीकृष्ण की विनम्रता से भी अधिक भावुक प्रतीत हुआ।

वे स्नान के लिए बाहर चले गए। इसी दौरान भगवान स्वयं जयदेव के रूप में प्रकट हुए और आकर उस पंक्ति को पांडुलिपि में जोड़ दिया। जब जयदेव लौटे और पंक्तियाँ देखीं, तो उन्होंने अपनी पत्नी पद्मा से पूछा कि यह किसने लिखा।
पद्मा ने कहा कि आपने ही स्नान से पहले आकर लिखा था।तब जयदेव समझ गए कि यह कार्य स्वयं भगवान जगन्नाथ ने किया है।उन्हें यह अनुभव हुआ कि भगवान उनके घर पधारे थे। ऐसा माना जाता है कि भगवान जगन्नाथ को 'गीत गोविंद' अत्यंत प्रिय है। इसलिए यह काव्य हर रात मंदिर में भगवान को शयन से पूर्व सुनाया जाता है। इसे ही 'गीत गोविंद सेवा' कहा जाता है।

श्री तुलसीदास: श्री तुलसीदास, भगवान राम के महान भक्त थे। वे एक बार पुरी आए थे ताकि भगवान जगन्नाथ को प्रणाम कर सकें।उन्होंने भगवान जगन्नाथ को श्रीराम का अवतार माना था। लेकिन जब उन्हें भगवान जगन्नाथ में श्रीराम का रूप नहीं दिखाई दिया, तो वे निराश हो गए और पुरी छोड़ने का निश्चय किया।वापसी के मार्ग में, जब वे एक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे, तो भगवान श्रीराम ने स्वप्न में दर्शन दिए और कहा, "मैं और भगवान जगन्नाथ एक ही हैं।"यह सुनकर तुलसीदास चकित हो उठे और तुरंत पुरी लौट आए। जब वे पुनः मंदिर पहुँचे, तो उन्होंने भगवान जगन्नाथ को श्रीराम के रूप में देखा और आश्चर्यचकित हो गए।उन्होंने भगवान से क्षमा माँगी, कि वे उनकी दिव्य उपस्थिति को पहले नहीं समझ पाए।इस दिव्य घटना की स्मृति में, हर वर्ष एक विशेष दिन भगवान जगन्नाथ को 'रघुनाथ वेष' में सजाया जाता है।यह परंपरा श्रीराम और भगवान जगन्नाथ की एकरूपता का सुंदर प्रतीक है।

श्री गुरु नानक: एक बार गुरु नानक देव जी भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन के लिए पुरी आए। लेकिन मंदिर के पुजारियों ने उन्हें मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं दी। गुरु नानक जी ने अपने हाथ उठाकर भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना की।
उन्हें अपने ही हथेलियों में भगवान जगन्नाथ का दिव्य रूप दिखाई दिया।बाद में, उन्होंने पुरी समुद्र तट के पास एक मठ (आश्रम) की स्थापना की और वहीं भगवान की उपासना शुरू की। एक दिन, जब गुरु नानक अपने आश्रम में भगवान जगन्नाथ की आरती कर रहे थे, भगवान स्वयं प्रकट हो गए।उसी समय, पुरी मंदिर के पुजारी यह देखकर चकित रह गए कि मंदिर की सारी आरती की सामग्री अचानक गायब हो गई थी और वह सब गुरु नानक के आश्रम में प्रकट हो गई।यह घटना दर्शाती है कि सच्ची भक्ति स्थान और परंपराओं से परे होती है, और भगवान अपने भक्त के भाव में ही वास करते हैं।

पंचसखा: पंचसखा (पाँच मित्र) भगवान जगन्नाथ के परम भक्त और प्रसिद्ध ओड़िया कवि थे। इन पाँचों आध्यात्मिक नेताओं में शामिल हैं: अच्युतानंद दास, अनंत दास, यशोवंत दास, जगन्नाथ दास, और बलराम दास। इन महान कवियों ने शास्त्रीय ओड़िया साहित्य को सरल भाषा में प्रस्तुत किया, ताकि आम जनमानस तक धर्म और भक्ति का संदेश पहुँचे। उनकी काव्य रचनाओं का मूल तत्व भगवान जगन्नाथ का दर्शन था।इनमें से कुछ लोकप्रिय कृतियाँ आज भी हर ओड़िया घर में पूजी जाती हैं, जैसे—'ओड़िया भागवत' — जगन्नाथ दास द्वारा रचित, 'लक्ष्मी पुराण' — बलराम दास द्वारा, 'मालिका' — अच्युतानंद दास द्वारा and इन ग्रंथों ने ओड़िया साहित्य और धार्मिक संस्कृति को एक नई दिशा दी, और भगवान जगन्नाथ की भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया।

संत बलराम दास: संत बलराम दास भगवान जगन्नाथ के महान भक्त थे। उनका जन्म ओडिशा के पुरी जिले में कोणार्क के पास एक गाँव में हुआ था। एक बार, जब उन्हें पुरी रथ यात्रा के दौरान भगवान जगन्नाथ के रथ पर चढ़ने की अनुमति नहीं मिली, तो उन्होंने पुरी समुद्र तट पर रेत का रथ बनाकर भगवान जगन्नाथ से विनम्र प्रार्थना की कि वे उस रथ में प्रकट हों। उनकी गहन भक्ति से प्रसन्न होकर

भगवान जगन्नाथ स्वयं रेत के रथ में प्रकट हो गए। उसी समय, पुरी के मुख्य मार्ग पर भगवान जगन्नाथ का रथ आगे नहीं बढ़ पा रहा था। राजा और मंदिर के पुजारियों को भगवान ने स्वप्न में निर्देश दिया कि वे बलराम दास को रथ पर बैठने के लिए आमंत्रित करें, तभी रथ आगे बढ़ेगा।जब बलराम दास को रथ पर बैठाया गया, तब भगवान का रथ चलने लगा। भगवान की कृपा से, बलराम दास ओडिशा के एक महान कवि बन गए।

उनकी रचना "ओड़िया लक्ष्मी पुराण" को भारत में 15वीं शताब्दी का पहला नारी मुक्ति और स्त्री-सशक्तिकरण का घोषणापत्र माना जाता है। यह ग्रंथ आज भी ओड़िया संस्कृति और भक्ति साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

संत श्री सालबेग: एक मुस्लिम भक्त: श्री सालबेग भगवान जगन्नाथ के एक अत्यंत भक्तिपूर्ण मुस्लिम भक्त थे। वे मुगल सूबेदार लालबेग और एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र थे।अपनी माँ से उन्होंने जाना कि भगवान जगन्नाथ, भगवान श्रीकृष्ण के अवतार हैं। मुस्लिम होने के कारण उन्हें पुरी मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली। एक बार वे भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा देखने के लिए पुरी जा रहे थे, लेकिन बीच रास्ते में बीमार हो गए।उन्होंने भावुक होकर प्रार्थना की कि प्रभु तब तक रुक जाएँ जब तक वे पहुँच न जाएँ।वास्तव में, रथ यात्रा के दिन भगवान जगन्नाथ का रथ एक स्थान पर रुक गया और आगे नहीं बढ़ा, जैसे कि वे अपने भक्त सालबेग की प्रतीक्षा कर रहे हों।जब सालबेग पुरी पहुँचे, तब उन्होंने भगवान के रथ पर उनका दिव्य दर्शन किया।बाद में वे एक महान कवि बने और भगवान जगन्नाथ पर कई भक्तिपूर्ण गीतों की रचना की। उनका दाह संस्कार पुरी में ही किया गया। आज भी, हर वर्ष 'बहुदा यात्रा' (वापसी यात्रा) के दौरान, भगवान जगन्नाथ का रथ सालबेग की समाधि के पास थोड़ी देर के लिए रुकता है, जहाँ यह माना जाता है कि भगवान अपने प्रिय भक्त के गीत सुनते हैं। यह परंपरा भक्ति की अद्भुत शक्ति और भगवान की करुणा का प्रतीक है, जो धर्म, जाति या रूप से परे होती है।

श्री जगन्नाथ का दर्शन / चेतना: श्री जगन्नाथ का दर्शन विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का एक महान समन्वय है, जो मानव जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। यही विशेषता जगन्नाथ संस्कृति को विश्व की अन्य सभी धार्मिक परंपराओं से अलग और विशिष्ट बनाती है। जगन्नाथ संस्कृति में निहित परंपराएं, धार्मिक अनुष्ठान, पारंपरिक ज्ञान और लोकबुद्धि न केवल आध्यात्मिक रूप से समृद्ध हैं, बल्कि वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। समय के साथ, ओडिशा की जनता ने इस महान संस्कृति के संरक्षण में खुद को स्वतः समर्पित किया है। विदेशी आक्रमणों, सामाजिक

चुनौतियों और संघर्षों के बावजूद, लोगों ने अपनी पवित्र सांस्कृतिक पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास किया है। श्री जगन्नाथ की संस्कृति आज भी सहिष्णुता, समरसता, भक्ति और मानवता का प्रकाश स्तंभ बनी हुई है।

Bhaki Movement and Saints and Scholars from the Monasteries in Jagannath Puri

Lord Jagannatha, as the Lord of the universe, has bestowed his divine blessings on his devotees irrespective of any caste, class, creed, or color, whosoever called him with love and devotion seeking his divine presence. Many great saints and scholars of India, like Adi Sankaraharya, Ramanujam, Ballabhacharya, Madhwacharya, Nimbark, Nanak, Jayadev, Sri Chaitanya, and Meerabai, have come to Purin and realized and perceived Lord Jagannath as the highest form of God. They established monasteries for religious preaching to their disciples which are found in and around Puri Temple, and they offer their services to Lord Jagannath on different occasions.

Shri Chaitanya Mahaprabhu: Chaitanya Mahaphrabhu was an ardent devotee of Lord Jagannath, who spent many years in Puri and took his last breath there. Once during the Anasara Ritual when Sri Chaitanya could not make darshan of Lord Jagannath in the holy shrine and he became mad - to Him Lord Jagannath was Govinda. He said, “Sunya Sunya Maha Sunya Gobinda Birahe Mamaha” - The moment I don’t see Govinda everything appears to be meaningless. He spread Vaishnavism all over India. Later on, his disciple of Bhakti Bedanta Prabhupada spread the ISKCON movement across the world, and Rath Yatra has been one of the most widely celebrated festivals in many cities of the Western World today.

Shri Jaydev: Jaydev was a great devotee of Lord Jagannath who is well known for his excellent Geeta Govidna in Sanskrit. Once, while writing the verses he was unwilling to write two lines of his thoughts “Dehi Pada Pallava Mudaram” which was an ardent appeal of Lord Krishna to his beloved Shri Radha to keep her feet on the heads of Lord Krishna. On another day, while Jaydev had gone for a bath, Lord came in the guise of Jayadev and filled the lines. When Jaydev came back he saw the lines were written. He asked his wife Padma who had written this, she said that he himself came before the bath and wrote these lines. Jaydev could understand that the Lord himself had come to his house and filled the lines. It is believed that Lord Jagannath loves to listen to Geeta Govinda. So it is recited in the temple every night before the Lord sleeps. This is known as Geeta Govinda Seva.

Shri Tulsi Das: Tulsi Das was a great devotee of Lord Rama who visited Puri to offer his prayer to Lord Jagannath. He considered Lord Jagannath as the incarnation of Ram. But he was disheartened when he couldn’t find the same and decided to leave Puri. On his way back, while he was sleeping under a tree, Lord Rama appeared in his dream and said that He and Lard Jagannatha are the same. Then Saint Tulsi returned to Lord Jagannatha Temple and was astonished to see Lord Jagannatha as Shri Rama. He prayed to the Lord to forgive him as he

could not realize his divine presence. To commemorate this occasion, Lord Jagannatha is adorned in Raghunatha Vesha once on a particular day in the year.

Shri Guru Nanak: Once, Guru Nanak came for the darshan of Lord Jagannatha, but the temple priests did not allow him to enter the temple. Nanak raised his hands and prayed to Lord Jagannata. He could see the image of the Lord in his palms. Later, he established a monastery near the Puri sea beach and started worshipping the Lord. Another day while Nanak was performing Arati (lamp offering ritual) to Lord Jagannatha in his ashram, the Lord appeared before him. At the same time, the priests of the temple found that all the arati materials had disappeared from the main temple and surfaced in the Ashram of Guru Nanak.

Panchasakha: Five Spiritual Leaders - Panchsakah (Five Friends) are eminent odia poets including Achyutananda Das, Ananta Da, Jasovanta Das, Jagannatha Da, and Balarama Das who were ardent devotees of Lord Jagnnatha. They have transformed the classical Odia Literature into simpler forms to reach the common mass. Jagannatha's philosophy was the essence of their poetic expression. Such as the Odia Bhagabata written by Jagannatha Das, Laxmi Purana by Balarama Das, and Malika, written by Achyutananda Das, are very popular Odia literature which are worshiped in every Odia home even today.

Saint Blarama Da was a great devotee of Lord Jagannatha who was born in a village near Konarak, Puri Odisha. Once, the priests did not allow him to climb the Chariot of Lord Jagannath. So he made a sand chariot at Puri sea beach and prayed to Lord Jagannath to appear in it. Pleased by his devotion Lord Jagannatha appeared in his sand chariot At the same time, the Chariot of Lord Jagannatha did not move on the grand road of Puri. Instructed by Lord Jagannata in a dream to please his devotee, the king and the priests requested Balaram Das to sit on the chariot, and then the Chariot of the Lord started to move. With the blessing of the Lord, he became a great poet of Odisha. His Odisha Laxmi Purana is considered the first manifesto of the Women's Liberation Movement and Feminism in India in the 15th century.

Shri Salabega - A Muslim Devotee - He was Lord Jagannath's passionate devotee and a son of Mughal Subedar, Lalbeg, and a Brahmin widow. From his mother, he learned that Lord Jagannata is an incarnation of Lord Krishna. Being a Muslim, he was not allowed to enter the Puri Temple. Once, he desired to see the Rath Yatra of Lord Jagannatha, but he suddenly fell ill on his way to Puri. He felt helpless and prayed to Lord Jagannatha to wait for him until he arrived at Puri. On the day of Rath Yatra, the Chariot of Lord Jagannatha, remained standing and still to give darshan to his devotee Salabega. Finally, he could make a darshan of Lord Jagannath on a Chariot at Puri. Later on, he became a great poet and wrote many devotional songs on Lord Jagannath, and he finally died at Puri. Every year, during Bahuda and the return journey, as a tradition, the Chariot of Lord Jagannatha halts for a while near the graveyard of Salabega, where the Lord listens to his devotional songs.

Sri Jagannath's philosophy/consciousness is a super synthesis of many religions and cultures that promotes essential human values and principles which make the Jagannata culture unique and distinctive from other worldly religions. The ritual practices and traditional knowledge and wisdom ingrained in Jagannath culture are very important from scientific, spiritual, and ethical points of view. Over the years, the people of Odisha have spontaneously involved themselves in preserving this grand culture and struggling to main their sacred identity intact despite confronting many challenges, foreign invasions, and assaults.	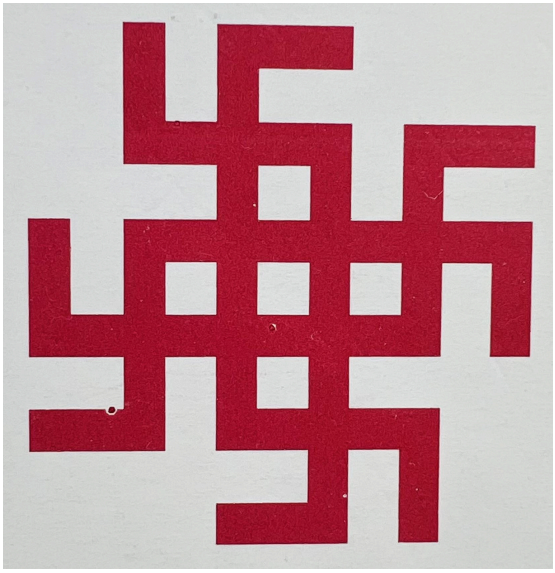

Thanks - धन्यवाद

Maino

पुस्तकालय में जाते ही मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने सुना था कि यहाँ शिक्षा और ज्ञान की बहुत सारी चीजें मिलती हैं। हमें पता चला कि यह पुस्तकालय 1928 में डॉ. कपिला कैटलन ने बनाया था।

चाय पीने के बाद, हमने 'लीला और खेरिया' नामक एक वृत्तचित्र फिल्म देखी। यह फिल्म रामलीला के लिए लोगों के जुनून को दिखाती है। गरीबी के बावजूद, लोग त्योहारों में भाग लेने के लिए एक साथ आते हैं।

मुझे एक अभिनेता की कहानी बहुत पसंद आई, जो राम की भूमिका निभाता था। वह एक मुस्लिम था, लेकिन हिंदू देवता का चित्रण करने में उसे सांत्वना मिलती थी। उसे लगता था कि इस भूमिका को निभाने से उसका जीवन बदल गया है। इसी तरह, अन्य अभिनेताओं ने भी अपनी भूमिकाओं में प्रायश्चित पाया।

कुछ गाँव वाले बहुत गरीब हैं, और कुछ अभिनेता और अभिनेत्रियाँ शहर में जाकर रोज़ी कमाने के लिए मजबूर हैं। लेकिन जब रामलीला का समय आता है, तो वे अपने गाँव में लौट आते हैं और इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं। वे इसकी सफलता के लिए बहुत मेहनत करते हैं।

गाँव वालों के जीवन में कई दुखी कहानियाँ हैं, लेकिन जब वे रामलीला में भाग लेते हैं, तो वे अपने दुखों को भूल जाते हैं। पूरे गाँव में हिंदू और मुस्लिम समुदाय के बीच कोई नफरत नहीं है। वे एक दूसरे का सम्मान करते हैं और जरूरत पड़ने पर मदद करते हैं।

गाँव वाले मानते हैं कि एक साथ मिलकर काम करना एक तरह की पूजा है। रामलीला में भाग लेने से कुछ अभिनेताओं के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है, जैसे कि राम, लखमण, सीता, भरत, हनुमान, रावण और अन्य। गाँव वाले रामलीला को बहुत उत्साह और जिज्ञासा से देखते हैं और इसे अपनी संस्कृति का हिस्सा मानते हैं।

गाँव वालों ने सीखा है कि एक साथ मिलकर काम करने से वे जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। अकेले रहने से वे ज्यादा दूर नहीं जा सकते। इस समुदाय से बहुत कुछ सीखने को मिलता है।"

रामलीला लोगों को एक साथ लाने का एक तरीका है। यह जाति और सामाजिक सीमाओं को पार कर जाता है। लोग मानते हैं कि जब तक वे अपने विश्वास पर कायम रहेंगे, उनकी समस्याएं हल हो जाएंगी।

March 26, 2025 IGNCA

Team: Savita, Garima, Pinki, Iryna

Rigveda Discussion

In the morning, we had a discussion led by Gabriela ji about gender roles in Rigveda. The Rigveda is the oldest of the four Vedas, the sacred texts of Hinduism. Composed in an ancient form of Sanskrit around 1500 BCE in the region that is now Punjab, India, and Pakistan, it comprises a collection of 1,028 hymns organized into ten books, known as "mandalas."

The argument was that there is no evidence of gender equality in that ancient document. While men are described as participating in all kinds of roles, activities, and transactions, women's roles are limited to household and family membership. Also, men perform actions on themselves and other objects and people (use of both transitive and non-transitive verbs), while women only perform actions on themselves (self-care and beautification). Women are not mentioned participating in any activities (social, religious, or work-related) outside the household. Transitive verbs are used only for women performing actions on their babies. Women also do not act independently, but rather always in tandem with their husbands. When women (rarely) have active roles, the latter do not show women's agency in the common understanding of this word (acting on the self for the sake of self), rather they ask for favors for their husbands or fathers. Then, we moved to IGNCA.

Red Fort IGNCA Museum

In Barack L1 of the Red Fort, IGNCA created a museum dedicated to their art incubation project. They invited artists from different art areas for a 3-month workshop to create new designs going beyond the traditional materials, methods, or patterns. The idea was to revitalize traditional art, to make it more interesting, more marketable, and profitable. The exhibits on the first and second floors of the museum display different types of art.

Sholapith:
Sholapith is a traditional Indian craft that uses the inner, spongy core of the Shola plant (*Aeschynomene aspera*), which grows in the marshlands of West Bengal and Tamil Nadu. This ivory-colored, soft, and lightweight material has been used for centuries to create ritualistic, decorative, and ceremonial objects. Sholapith is prized for being soft, light, eco-friendly, and renewable. It is used to craft idols, masks, wedding decorations, and more. Sholapith was blended with Kalamkari floral motifs. Results included large installations, miniature decor, and adaptations for modern aesthetics.

Tholu Bommalata (Shadow Leather Puppets):

Originating in Andhra Pradesh during the 16th century (Vijayanagara Empire), these translucent goat-skin puppets were painted in bright colors and perforated. They were used in village storytelling during festivals, often about Indian epics, using lamp light and live narration. Since the 1970s, this tradition declined due to economic issues. Some artisans switched to leathercraft or agriculture. Nimmalkunta (Anantapur) remains a center for leather goods inspired by the puppets' aesthetic. Artisans likely migrated from Maharashtra. Themes are mostly from *Mahabharata* and *Ramayana*. Puppets are 3–6 feet tall. Modern innovations include lanterns, lamps, and accessories. Designer Rashmi Singh collaborated with artisans to revive interest.

Ganjifa Cards from Odisha:

Ganjifa is a traditional card game that dates back several centuries in India, with Odisha being one of the prominent regions where this art form evolved and flourished. Originally played in royal courts and temples, Ganjifa cards were more than just a game - they were also tools for storytelling, spiritual reflection, and cultural education.The following themes are represented: 1) Cyclical and linear life patterns; 2) Circular & rectangular cards for eternal and individual journeys; 3) Draws from Hindu mythology, nature, and folklore; 4) Rich symbolism and tactile interaction.

The cards reflect deep philosophical and symbolic meanings. Their circular shape often represents the cyclical nature of life, while rectangular cards suggest the linear progression of human experience. Every motif and color carries spiritual and emotional significance—fertility, abundance, love, sacrifice, and devotion.

In Odisha, Ganjifa cards were traditionally used during festivals and religious gatherings. Over time, the practice of playing the game declined, but the cards remained a treasured art form. Today, they are appreciated for their aesthetic beauty, narrative power, and as a tangible connection to India's heritage.

Currently, institutions like the Aatmanirbhar Bharat Centre for Design (IGNCA at Red Fort) are working with artisans to revive and reinterpret Ganjifa cards through installations like "Mosaic of Life." These efforts highlight the timeless relevance of Ganjifa by integrating traditional symbolism with contemporary storytelling and immersive design.

Woodblock Printing:

From Masulipatnam/Machilipatnam, Andhra Pradesh. Period: 15th–17th centuries (Golconda Kingdom). Originally freehand painted (*vraathapani*), block printing (*acchu/addakam*) was later adopted with Vijayanagar influence. Represents a transition from painted to printed textiles while preserving stylistic diversity.

There were also exhibits with elaborate and colorful wooden and clay toys. Importantly, the exhibits of this museum not only show the final products, but also explain the process and exhibit the materials and tools used by artists. Also, the latter are given credit: on display there are bios of many artists, which helps understand their background and aspirations.

हम सब एक हैं **We As One**'

आर्ट गैलरी के बाद, हम दोपहर के खाने के लिए वहीँ लाल किले के अंदर बनी एक इमारत में

गए और वहां सबने अपनी-अपनी पसंद का खाना खाया। वहाँ हनीफ़ कुरैशी की कलाकृति 'हम सब एक हैं We As One' देखकर बहुत खुशी हुई!

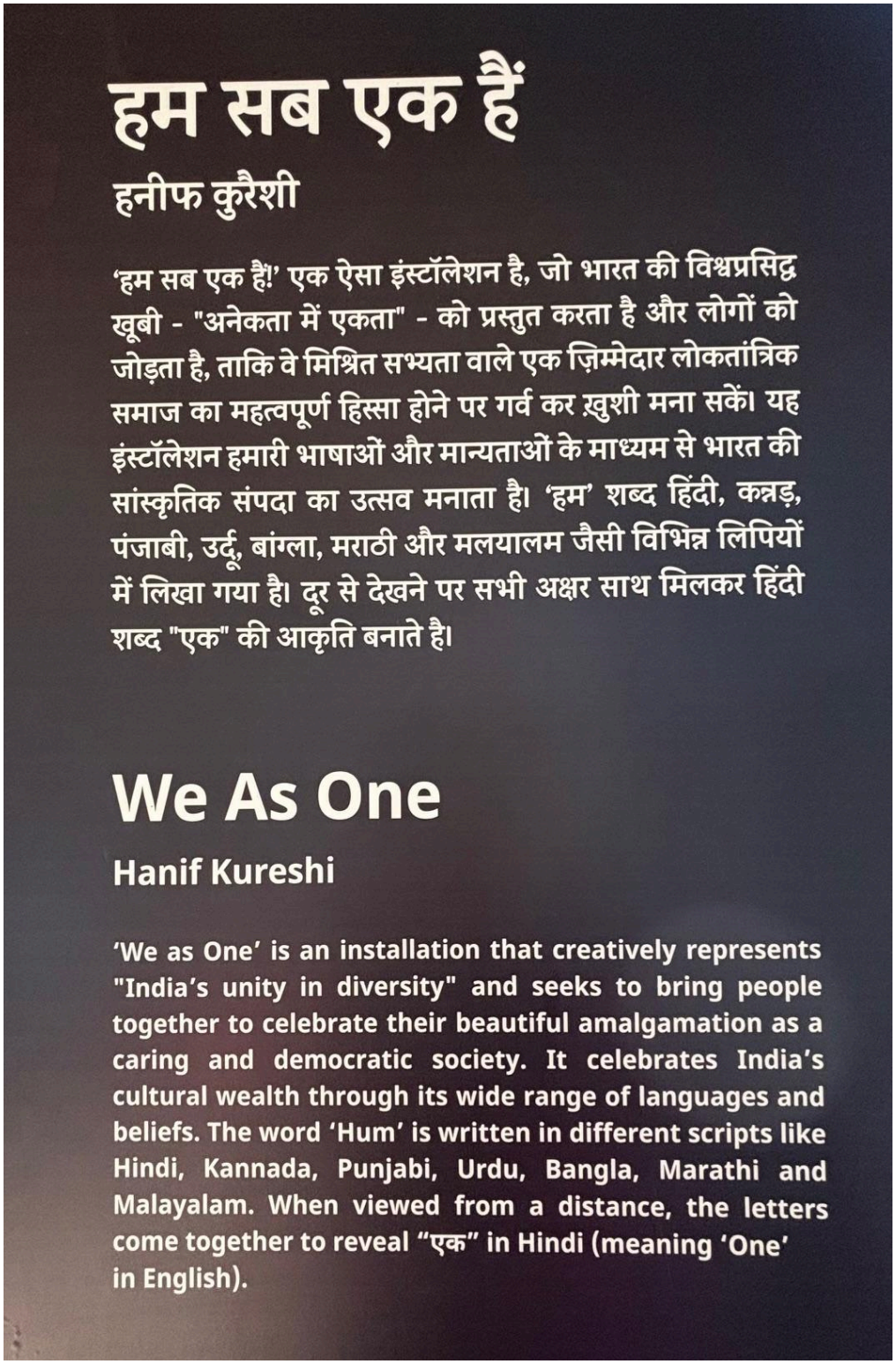

हम सब एक हैं

हनीफ कुरैशी

'हम सब एक हैं!' एक ऐसा इंस्टॉलेशन है, जो भारत की विश्वप्रसिद्ध खूबी - "अनेकता में एकता" - को प्रस्तुत करता है और लोगों को जोड़ता है, ताकि वे मिश्रित सभ्यता वाले एक ज़िम्मेदार लोकतांत्रिक समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा होने पर गर्व कर ख़ुशी मना सकें। यह इंस्टॉलेशन हमारी भाषाओं और मान्यताओं के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक संपदा का उत्सव मनाता है। 'हम' शब्द हिंदी, कन्नड़, पंजाबी, उर्दू, बांग्ला, मराठी और मलयालम जैसी विभिन्न लिपियों में लिखा गया है। दूर से देखने पर सभी अक्षर साथ मिलकर हिंदी शब्द "एक" की आकृति बनाते है।

We As One

Hanif Kureshi

'We as One' is an installation that creatively represents "India's unity in diversity" and seeks to bring people together to celebrate their beautiful amalgamation as a caring and democratic society. It celebrates India's cultural wealth through its wide range of languages and beliefs. The word 'Hum' is written in different scripts like Hindi, Kannada, Punjabi, Urdu, Bangla, Marathi and Malayalam. When viewed from a distance, the letters come together to reveal "एक" in Hindi (meaning 'One' in English).

खाना खाने के पश्चात हम सब प्रतिभागी लाल किला और उसके परिसर में बनी अन्य इमारतें देखने गए जोकि अद्भुत अनुभव था। हमारे साथ IGNCA के श्री वीरेंदर बाँगरू जी और श्री बादल जी भी थे, वीरेंदर जी हमको हर जगह का महत्व, उससे जुड़ी कहानियाँ और रोचक तथ्य बताते हुए हमारे साथ चल रहे थे जोकि हमारे लिए बहुत ज्ञान वर्धक था।

लाल किला

दिल्ली में स्थित लाल किला भारत के सबसे प्रतिष्ठित ऐतिहासिक स्मारकों में से एक है। इसे मुगल बादशाह शाहजहाँ ने 1638-1648 में बनवाया था। लाल किला लगभग 200 वर्षों तक मुगल सम्राटों के मुख्य निवास के रूप में कार्य करता रहा, जब तक कि 1857 में भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध के बाद अंग्रेजों ने इसका नियंत्रण नहीं ले लिया।

इसकी विशाल लाल बलुआ पत्थर की दीवारों के कारण इसे लाल किला कहा जाता है। 2007 में, यूनेस्को ने इसके ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व को मान्यता देते हुए इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किया।

लाल किले के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य -

1. स्थापत्य कला का चमत्कार**:**

फारसी, तैमूर और भारतीय प्रभावों के साथ मुगल शैली में निर्मित।

254.67 एकड़ में फैला, 2.41 किमी की रक्षात्मक दीवार से घिरा हुआ।

2. स्वतंत्रता दिवस का महत्व**:**

भारत के प्रधानमंत्री हर साल 15 अगस्त को यहाँ राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। यह परंपरा 1947 में जवाहरलाल नेहरू के भाषण से शुरू हुई।

3. ब्रिटिश और औपनिवेशिक युग का प्रभाव**:**

1857 के विद्रोह के बाद, ब्रिटिश सेना ने किले को लूट लिया, कई संरचनाओं को नष्ट कर दिया और इसे एक सैन्य शिविर के रूप में इस्तेमाल किया।

अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र को बर्मा (म्यांमार) में निर्वासित करने से पहले यहाँ मुकदमा चलाया गया था।

लाल किले के भीतर के क्षेत्र के प्रमुख स्मारक

1. लाहौरी गेट - मुख्य प्रवेश द्वार, जिसका नाम लाहौर (अब पाकिस्तान में) की ओर इसके उन्मुख होने के कारण रखा गया है।

2. दिल्ली गेट - राजघरानों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक और भव्य प्रवेश द्वार।

3. दीवान-ए-आम (सार्वजनिक श्रोताओं का हॉल) - एक बड़ा मंडप जहाँ सम्राट सार्वजनिक शिकायतों को संबोधित करते थे।

4. दीवान-ए-ख़ास (निजी श्रोताओं का हॉल) - प्रसिद्ध मयूर सिंहासन (जिसे बाद में 1739 में नादिर शाह ने ले लिया) वाला एक शानदार कक्ष।

5. मोती मस्जिद (मोती मस्जिद) - औरंगज़ेब द्वारा अपनी निजी प्रार्थनाओं के लिए बनाई गई एक छोटी, सुंदर मस्जिद।

6. रंग महल (रंगों का महल) - नहर-ए-बिहिश्त (स्वर्ग की धारा) के रूप में जानी जाने वाली जलधारा वाला एक सुंदर महल।

7. हम्माम (शाही स्नानघर) - फारसी परंपराओं से प्रेरित मुगल शैली के भाप स्नान।

8. खास महल - सम्राट का निजी निवास।

9. मुमताज महल - कभी शाही हरम का हिस्सा था, जिसे अब संग्रहालय में बदल दिया गया है।

10. नौबत खाना (ड्रम हाउस) - एक प्रवेश द्वार जहाँ संगीतकार सम्राट के लिए औपचारिक संगीत बजाते थे।

वर्तमान स्थिति और संरक्षण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा प्रबंधित।

इसमें कई संग्रहालय हैं, जिनमें आज़ादी के दीवाने संग्रहालय (आईजीएनसीए द्वारा), याद-ए-जलियाँ संग्रहालय और 1857 युद्ध स्मारक संग्रहालय शामिल हैं। लेकिन समय के अभाव के कारण हम देख नहीं पाए।

जब हम सभी प्रतिभागी वापिस लौट रहे थे तो हमने देखा कि वहाँ शाम को आयोजित होने वाले प्रकाश और ध्वनि शो के लिए सब कुछ तैयार था, ये शो एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण है।

Gurdwara Bangla Sahib

In the evening, some of us visited the Gurdwara Bangla Sahib. Gurdwara Bangla Sahib is one of the most prominent and revered Sikh gurdwaras in India, located in the heart of New Delhi, near Connaught Place. It is known for its serene golden dome, sacred Sarovar (pond), and deep spiritual significance. Gurdwara Bangla Sahib is dedicated to: *Guru Har Krishan Sahib Ji*, the eighth Sikh Guru. In 1664, Guru Har Krishan Ji stayed at this location—then a bungalow (bangla) belonging to Raja Jai Singh. During a smallpox and cholera epidemic in Delhi, Guru Har Krishan Ji selfless service, healing people with water from the well at this site. He eventually fell ill and passed away here at a young age, and the site became a sacred space in his memory.

March 27, 2025 IGNCA (Bhanu, Kusum, Bhanu, Prashant)

IGCNA - Day 4

Phonored in certain verses, are Prashant's Presentation on Manu Smriti - Honestly this was an eye opener and an in depth understanding of Manu Smriti (Thanks Prashant!)

I (Bhanu) find myself torn between its historical significance and its modern-day implications. Written at a time when societal structures were rigid and hierarchical, the Manusmriti outlines an

intricate code of conduct that reflects deep-rooted gender disparities.One of the most striking aspects of this text is its portrayal of women versus men. It places men at the center of social and moral authority, while women, despite being ultimately bound by rules that limit their autonomy. The often-quoted verse—*"Na stri swatantryam arhati"* (A woman does not deserve independence)—epitomizes this restrictive framework. Women were expected to be under the guardianship of their fathers in childhood, their husbands in youth, and their sons in old age. Their primary role was confined to domestic duties, service to the family, and upholding the honor of the household.

Yet, despite its patriarchal undertones, Manusmriti also recognizes the importance of women in society. It states, *"Yatra nāryastu pūjyante ramante tatra devatāḥ"* (Where women are honored, there the gods rejoice). This paradoxical perspective—where women are revered yet restricted—reflects the complexity of ancient thought.

Fast forward to the present, and I see a society that has evolved yet remains tethered to some of these age-old principles. Legal reforms, education, and social movements have granted women greater rights and opportunities, challenging the rigid norms once dictated by texts like the Manusmriti. Women now occupy positions of power, lead in various fields, and shape their own destinies. However, remnants of Manusmriti's ideology persist subtly in cultural expectations, gender roles, and societal norms.

Even today, the concept of a woman's honor being tied to her family's reputation echoes in the way we view female behavior and choices. Marriage, for many, remains a central institution dictated by traditional values. The preference for male heirs in certain societies, the expectation of female submission in some families, and the moral scrutiny women face are reflections of an enduring Manusmriti mindset.

So, do we still follow Manusmriti? Perhaps not in its literal sense, but its influence lingers in the deep recesses of our collective consciousness. As I reflect on this, I wonder—can we ever completely shed the past, or will we continue to rewrite it in ways that suit our evolving identities?

Session 2:

Bhakti and Gender -

Attending today's session on *Bhakti and Gender* was an eye-opening experience. As I sat listening to the discussion unfold, I found myself drawn into the deeply intertwined relationship between devotion and social structures, particularly how the Bhakti movement provided a space for challenging gender norms.

One of the most striking aspects of the session was how the Bhakti tradition, which flourished between the 7th and 17th centuries, offered a counter-narrative to the rigid caste and gender hierarchies of its time. Bhakti saints—men and women alike—rejected ritualistic orthodoxy and instead embraced a personal, emotional connection with the divine. Mirabai, for instance, was a Rajput princess who renounced her royal status and familial obligations in pursuit of Krishna. Her poetry reflects not only deep love and longing but also an outright defiance of societal expectations placed upon women. The session highlighted how Mirabai's life was a direct challenge to the Manusmriti-like structures that bound women to their roles as daughters, wives, and mothers. Her refusal to conform, to be defined by marriage or lineage, was revolutionary.

Similarly, Akka Mahadevi's story was both inspiring and unsettling. She rejected worldly attachments, wandered freely, and composed Vachanas (devotional verses) that critiqued male dominance in spiritual and societal spaces. The session prompted me to reflect on how radical it must have been for a woman in the 12th century to walk away from a conventional life, choosing divinity over societal duty.

Beyond historical narratives, what struck me was how the Bhakti tradition continues to resonate today. The idea that devotion can transcend gender, that spirituality can be a means of resistance, still holds power. While mainstream religious institutions continue to be male-dominated, the voices of women in Bhakti poetry remain a testament to the enduring struggle for agency and self-expression.

As I walked away from the session, I couldn't help but wonder: Can devotion still serve as a tool for liberation in modern times? How do contemporary women reclaim spiritual spaces that often remain exclusionary? The Bhakti poets lived centuries ago, but their defiance, passion, and assertion of selfhood feel just as relevant in today's world.

Session 3 - "Mera Gaon Meri Dharohar"

Attending today's presentation on *Mera Gaon Meri Dharohar* (MGMD) was an enlightening experience. The initiative, led by the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), aims to document and map the cultural heritage of every village in India. As I listened to the speakers, I realized how ambitious and significant this project truly is.

One of the most striking aspects of this initiative is its scale—India is home to over 6.5 lakh villages, each with its own unique traditions, art forms, dialects, rituals, and folklore. The idea of systematically collecting and preserving this data is not just an academic exercise; it is an act of cultural preservation. In an era of rapid urbanization and globalization, many traditional practices are at risk of fading away. The MGMD project, through its meticulous documentation, ensures that these living histories are not lost.

What we found particularly fascinating was the interdisciplinary approach used in the project. The presentation showcased how researchers, anthropologists, linguists, and historians are working together to record village histories, customs, festivals, and even geographical narratives. The use of digital mapping and technology to store this data makes it accessible to a larger audience, which is commendable.

Another aspect that resonated with me was how the project gives voice to the grassroots. Often, discussions on India's cultural heritage are limited to grand monuments, royal legacies, and mainstream traditions. However, this initiative focuses on the everyday lives of rural communities—how they celebrate, how they create art, and how their customs shape their identities. It challenges the notion that heritage is only about palaces and temples; rather, it exists in local crafts, oral traditions, and ways of life that have been passed down for generations.

The session left us with a deep appreciation for this work. It also made us wonder about how this information could be used for policy making, tourism, and education. Could this data help in reviving dying art forms? Could it promote sustainable rural tourism? More importantly, could it foster a sense of pride among villagers in their own heritage?

Leaving the presentation, we felt inspired by the dedication of those involved in the MGMD project. It reinforced the importance of preserving India's diverse cultural landscape—not just for academic purposes, but as a means of honoring and sustaining the soul of rural India.

Section 4 - Talk on Rock Art - Dr. Richa Negi, HOD

Preservation Efforts

The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) has been instrumental in documenting and preserving the rock art! Sessions across Visual Archives, Cultural Informatics, Rock Art, Kalakosa, and Tribal Art reflected IGNCA's interdisciplinary ethos.

There was a model presentation about Bhimkheda rock shelters. They brought the rocks so that we can have the feel and details regarding it.

Dr. Arun Kumar Bhardwaj serves as a Professor in the Kalakosa Division and is the In-Charge of the Academic Unit at the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA).

Kalākosha Division – IGNCA

The Kalākosha Division at the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) is a cornerstone of its research and intellectual heritage initiatives. It is dedicated to exploring, documenting, and interpreting India's traditional knowledge systems, philosophies, and art theories in both historical and contemporary contexts.

- Acts as a bridge between classical knowledge and modern pedagogy, useful for curriculum development, especially in Hindi and Indian arts education.

- A valuable resource for teachers, translators, scholars, and students working in Indian philosophy, performance, and visual culture.

Mr. Anurag Punetha holds the position of Media Head at IGNCA, overseeing media-related activities and initiatives. With 25 years of experience in media and television, his background includes roles such as News Editor (National Affairs) and Associate Executive Producer/News Anchor.

Shri Anurag Punetha, serving as the Controller of the Media Centre at the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), has overseen several notable projects that contribute significantly to India's cultural preservation and promotion. Key initiatives under his guidance include:

1. Archive of Indian Advertisements (March 2025):

Under Shri Punetha's leadership, IGNCA launched a special archive dedicated to showcasing the evolution of Indian advertising from the 1950s to the present. This collection highlights iconic campaigns and celebrates the cultural and psychological impact of vintage advertisements on Indian society. Shri Punetha emphasized that the archive does more than just preserve ads; it safeguards the creative narratives and emotional tapestries that have shaped India's brand engagements.

2. Restoration of 'Kala Ghoda' Sculpture in Vadodara (January 2024):

Shri Punetha played a pivotal role in disseminating information about the restoration and conservation of the iconic 'Kala Ghoda' sculpture in Vadodara, Gujarat. This project marked a significant milestone in outdoor sculpture conservation in India, reflecting IGNCA's commitment to preserving the nation's artistic heritage.

3. IGNCA's 37th Foundation Day Celebrations (March 2024):

As part of the Foundation Day celebrations, Shri Punetha coordinated a series of cultural programs, including classical music performances by renowned artists such as Ayaan Ali Bangash and Pt. Rahul Sharma. The events also featured exhibitions, workshops, and book launches, showcasing India's rich cultural diversity. Shri Punetha highlighted that, in addition to the headquarters, various programs related to the Foundation Day were organized at IGNCA's nine regional centers, further extending the reach of these cultural initiatives.

Through these projects, Shri Anurag Punetha has significantly contributed to IGNCA's mission of preserving and promoting India's diverse cultural heritage.

At the end of the day, a vibrant folk cultural evening was specially organized for the Fulbright team, celebrating the rich tapestry of India's performing arts. The program began with a soulful Ganesh Vandana, setting an auspicious tone for the evening. This was followed by a spirited showcase of regional folk dances including Punjabi Bhangra, Phagun

dance, Garba from Gujarat, Rajasthani folk, Assamese Bihu, and a medley of patriotic songs.

Adding to the joy, Fulbright participants enthusiastically joined the performers on stage, dancing to lively Dandiya beats and immersing themselves in the rhythm and energy of Indian folk traditions. The evening was a beautiful celebration of cultural unity, leaving everyone with a sense of pride and deep appreciation for India's vibrant heritage.

March 29, 2025 (Savita, Garima, Pinki, & Iryna)

Visit to Rashtrapati Bhawan

Rashtrapati Bhavan is the official residence of the President of India, located at the western end of Rajpath (now known as Kartavya Path) in New Delhi, India. It is one of the largest and most magnificent presidential residences in the world, spread over 320 acres, featuring 340 rooms, extensive gardens, offices, and reception halls. Rashtrapati Bhavan was originally constructed as the residence of the Viceroy of India during the British Raj. Its construction began in 1912 and was completed in 1929, taking approximately 17 years to finish.

The residence consists of the:

Main Building, which houses the President's official residence, guest rooms, offices, and reception areas.

Durbar Hall - a grand hall located under the central dome, used for official ceremonies such as the swearing-in of Prime Ministers and Chief Justices.

Ashoka Hall: A truly magnificent, lavishly decorated hall used for ceremonial functions and banquets, featuring Persian-style architecture and elaborate frescoes (e.g., citing Koran and featuring an Iranian guy on a horse) on the ceilings. The hall’s floor is covered by the most expensive (in the world) Persan carpets (covering the floor wall to wall). Unfortunately no phones or photography was allowed inside.

Mughal Gardens: A 15-acre garden situated at the back of the Bhavan, known for its intricate design, beautiful flowers, and fountains. It is open to the public annually for two months from February to March. We were lucky to see the garden’s splendor.

IGNCA

Back at IGNCA, we had a session on storytelling. It was not very informative, but fun. We clapped hands and counted. Then the main management of IGNCA came for the last farewell.

End of the study trip!